Raga of the Month March 2025   Raga Jayanil

राग जयनील

राग जयनील - इस राग का सृजन पुणेके पंडित विजय बक्षीजी ने किया है। इस रागमे हम मारवा थाटका भटियार और नन्द रागका मिश्रण पाते है। इस रागमे दोनों मध्यमोंका प्रयोग होता है, बाकी सब स्वर शुद्ध लगते है। वादी मध्यम और संवादी षड्ज है। इस रागकी जाती औडव- संपूर्ण है।

आरोह - सा म प प ध नि ध प, म॑ ध सा। अवरोह - सां [रें]नि [ध]प, [म॑]प ग म ध प रे सा, ऩि धऺ सा।

रागका मुख्य अंग इस प्रकार है - सा म प ध नि [ध]प, ग म [ध]प रे सा, ऩि रे सा।

वाचकोंको यह जानकर आनंद होगा की सा,रे,ग,म, म॑,प,ध ,नि इस स्केलके समस्वरी (स्केल कॉन्ग्रुअन्ट) ३० से अधिक रागोंके ऑडियो **oceanofragas** संकेत स्थलपर उपलब्ध है, जिनमे यमनकल्याण, यमनी बिलावल , केदार, बिहाग, हमीर, कामोद, नन्द, गौड़ सारंग जैसे पारंपारिक रागोंके सिवाय तिलक कल्याण, श्याम कल्याण, खेम कल्याण, हमीर कल्याण, गुण कल्याण, दुर्गा कल्याण, सुधा केदार, शिव केदार, सावनी केदार, संगम केदार, संपूर्ण केदार, नट केदार, मारूु केदार, शंकरा बिहाग ,नट कामोद , नट हमीर आदि अन्य अल्पप्रचलित रागोंके ऑडियो उपलब्ध है।

आज के ऑडीओ मे हम पंडित विजय बक्षीजी ने गाया हुआ राग जयनील का अंश सुनेंगे। .

आभार - पंडित विजय बक्षी, पंडित यशवंत महाले.

01-03-2025.

Link to the list of 160+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles   https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx